

खलील खान ने वताया कि अभियान के तहत 18 से 45 तथा 45 से अधिक आयु वर्ग के कर्मियों को कोरोना की वैक्सीन लगायी जाएगी।

Read Only - You can't save changes to this file.



Sign in to edit and save changes to this file.

kj-ukzua& UPHIN/2009/44666 Star Cash दिल्ली বাতয सरकार द्वारा कानपुर देहात, सोमवार ०२ अगस्त २०२१ 1: 12 Email: sattaexpress@rediffmail.com Э आज व कल कृषि विश्वविद्यालय के कार्मिकों को लगेगा कोरोना रोधी टीका जाएगा। यह जानकारी विश्वविद्यालय दैनिक सत्ता एक्सप्रेस के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉक्टर कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं आरपी सिंह के हवाले से मीडिया प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपूर के प्रभारी डॉ खलील खान ने दी। कार्मिकों को विश्वविद्यालय स्थित मानव चिकित्सा केंद्र पर दिनांक 2 अधिकारी ने विकास किरा खंड एवं 3 अगस्त 2021 को दो दिन 18 पंचायतों में औचक निरीक्षण गाम से 45 एवं 45 से अधिक आयु वर्ग के दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कार्मिकों को कोरोना रोधी टीका लगाया

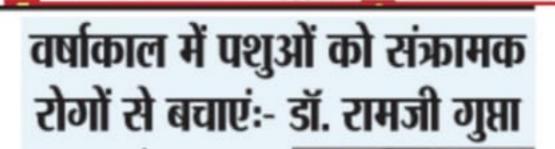


क्रमनपुर चेत्राल,

संपत्रकार, 0.2 अगाला, 2021 मी: 06 अंग्रेस: 303 समर: 1-1-2 स.

(C)

अमन यात्रा ब्युरो



राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

डी ए बी पी (भारत सरकार) से विझापन प्रकाशन हेतु मान्द्रता प्राप



में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका-खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह हे कि यह रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सुख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना फयदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस रोग से पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में फन्नेले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना पैरो में सूजन (ख़ुर के आस-पास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है।

खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा हो जाना कभी-कभी खुर का पैर से अलग हो जाना। मुँह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ट आदि पर छाले पड़ जाते हैं छाले फूटने



पर उसमें पस पड़ जाता है जिससे चारा खाने तथा पानी पीने में असमर्थ हो जाता है तथा तेजी के साथ दर्द होता है। गाभिन पशुओं का

कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नहीं है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है। उत्पादन क्षमता में अत्यधिक हास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी,प्रभावित पशु स्वस्थ्य होने के उपरान्त भी महीनों हांपत्ते रहता है।बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है।शरीर के रोयें तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरन्त अलग बाढे में कर दें एवं पशु के चारागाह को बदल दें।इसका टीकाकरण अवश्य करा लें। इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का काढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालो को लाल दवा अथवा बोरिक एसिड के घोल से दो-तीन बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली एंटीसेप्टिक कीम लगाये। मुँह के छाले को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुलायम एवं सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।



सीएसए में 2-3 अगस्त को लगेगी वैक्सीन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के मानव

चिकित्सा केंद्र में सोमवार व मंगलवार को 18 से 45 और 45 से अधिक आयु वर्ग के कर्मचारियों को कोरोना रोधी टीका लगाया जाएगा। यह जानकारी अधिष्ठाता छात्र



कल्याण डॉ. आरपी सिंह के हवाले से मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने दी है। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक कर्मी पहुंच कर वैक्सील लगवाएं।

वर्ष १५ अंक २१० पृष्ट-८ मूल्य-१ रू० कानपुर, सोमवार ०२ अगस्त २०२१

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

20100.

आप की आवाज़....

जी कॉमेडी शो में तनावमुक्त होकर खिलखिला

www.nagarchhaya.com ⊾ पेज - 8

वर्षाकाल में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं : डॉ. रामजी गुप्ता

(भगा समाचार)। चंद्रशेखर आजद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के कम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञन विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के सिए बरसात में पशुओं को संजयमक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संज्ञामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अलस्या में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारुँ पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पत्रु की मौत भी सकती है। इसलिए प्रमुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विलेष देखभाल करना चाहिए। अगर पत्नुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर सोहा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संऋगमक रोगों से बचायां जा सकता है। संकामक बोमरियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीम्पर पशु का दक्षित जल एवं भोजन राहण करने से फैलता है। ही गुषा ने बताया कि विषाण्वनित रोग खुरपका एवं मुंडपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पनि वाले कोंडे हारा होता है। जिसे लिपाणु या वापरस कहते हैं। मुंहपका-खुरएका रोग किसी भी उम्र को गांधें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह हे कि बड़ रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि गांव में इस रोग से मीत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सुख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं हें इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगता लेगा फापदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस रोग से चलू को तेज बखार आता है। पैरों तथा मुंह में



फफोले पढ़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना पैरो में सूजन (खुर के आस-पास) जिससे पत्नु लंगदाकर चलता है। खुर में घाव होना एवं घावों में कींड्रा हो जाना कभी-कभी खुर का पिर से असग हो जाना।

मुँह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसुई, ओष्ट आदि पर साले पड जाते हैं खले फुटने पर उसमें पस पढ़ जात है जिससे चारा खाने तथा पानी पीने मे असमर्थ हो जाता है तथा तेजी के साथ दर्द होता है। गाभिन प्रष्ठुओं का कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगों पत भरता तो नहीं है परना बहुत कमजोर हो जाता है। उत्पादन क्षमला में अल्पधिक हास, बेलों की कार्य क्षमता में कमी,प्रधालित पशु स्वस्त्रय होने के उपरान्त भी महीनों हफिते रहता है व्योमारी से दीक होने के बार भी पत्नुओं की प्रजनन श्रमत वर्षों तक प्रयाजित रहती है झारीर के रोपें तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पह को तुरन्त अलग बाढे में कर दें एवं पत्र के चारागाह को बदल दें । इसका टीकाकरण अंतरप करा लें। इस रोग की रोकधान के लिए

रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल

के साले का काझ बना कर दिन में दी

से तीन बार धोना चाहिए। द्यालों को

लाल दता अयता बेरिक एमिड के

घोल से छे-तीन बार धोकर मकक्षी को

दर रखने वाली एंटीसेप्टिक क्रीम

लगाप

मुँह के जाते को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरो 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तौन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुखायम एवं सुचाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। ददेनाजक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। वदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरन्त पशुधिफित्सक से सम्पर्क करें । गलाभोट

पशुओं में मलापोट को ऐसे पहचाने पशु को तेज बुखार आंख है गले तथा जींध में मुजन बढ़ जाती है जिसके कारण पशुओं को खांस लेने में तकलीफ होने लगती है और उसके गले से घरं-धरं की आजाज जिकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अवस्था में पशु चारा तथा पानी नहीं थी पाता है, यहां तक की उसे लार घुटकज मुस्किल हो जाता है, चरिणाम स्वरूप पशु के मुंह से लार टपकरी रहती है। पशु के गले में सुलन के स्थान पर छुने से गर्भ का एहसास होता है। पत्नु की आंखें लाल तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचीन रहता है। इस रोग को अवधि 1-3 दिन तक होती है । ऐसी अनस्या में अगर उपचार न किया गया और लापरवाही बरती गयी तो पशु को मीत भी ही सफती है।

बनाया जा सकता है ।

उपचार: इस रोग के उपचार में सल्फाद्रग उच्च प्रति जीविक तथा बुखार एवं दर्द कम करने की दवायें दी जाती हैं। यह रोग को उग्रता पर निर्भर करता है अत: अपने नजदीक के पशुचिकित्सालप से सम्पर्क कर जीवत इलाज करवायें, लापरवाही की तो पशु से हाथ धोना पढ़ सफता है।

लंगडी बुखार अवना सुबना सुववा युखार के लखणः पीढित पशु को तेव बुखार जाता है। पशु के कंधी एवं जांधों में सूबन जा जाती है या कहें कंधों एवं जांघ हया भर जाती है, जिसके कारण चुरं-चुरं की आनाव आती है। इस रोग की अन्तर्धि 1 से 5 दिनों तफ होती है। अगर रोग पर निषंत्रण नहीं किया गया तो पशु की तीन दिनों के अंदर मृत्यु सम्भव लेता है तमा शरीर में मूलन आ जाती है। ऐसी अलस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु को अधानक मृत्यु भी डो सकती है । यह रोग प्रभावित पशु के सम्पर्क में आने पर अन्य पशुओं में फिल्ला है।

बचानः रोगी पत्नु को बाढे से तुरल अलग कर दें। किसी भी अवस्वा में पीड़ित पत्नु का चारा -पानी अन्य पत्नु को न दें। अगर पत्नु की मृत्यु हो गयी है तो मृत पत्नु को कभी भी सीचे हाथ से न सूचें तथा मृत पत्नु के सिदों को तुरला बन्द कर दें। मृत पत्नु को जला दे अथवा जमीन में चूना डालकर दफला दें।

उपचारः इस रोग के शुरुआती दौर म एन्ग्रेक्स एन्टीसीरम 100-150मी.मी. का इंजेक्शन लगवाने के नवदीक बाद तुरन्त पत्नचिकित्साधिकारी से सम्पर्क करें। धनेलाः मिसटाइटिस लक्षणः साधरणतया यह रोग दधारू पत्न के अपन तथा धनों में होता है । रोग से प्रभावित होने पर पशु के आपन में दर्द होता है तथा थनों में दूध का वहाव बन्द हो जाता है । रोग अधिक तीव होने पर थर्नों में सुजन आ जाती ह तथा उनको दबानें पर दूध की जगह सून निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए स्टीप कप परीक्षण करते हैं जिससे इसकी पुष्टि होगी है । बचातः इस रोग से बचात के लिये आवश्यक है कि दुहाई पूर्ण हस्त विधि से सुखे ताथों एवं एक पशु की दुहाई के वाद दूसरे पशु के मनी को किसी रोगाणुनाशक से अवश्य थे ले ।

उपचारः पशु के बनी एवं आपन में

पदि गांठ पड़ गयी हो तो पेंसिलीन

एन्टीबॉवोटिक का प्रयोग करते हैं

इसके अलावा पेडीस्ट्रीन को प्रभावित

बन में चातानें से, बन इस रोग से मुन्ह

................

हो जाता है।

सार टपकरों रहती है। पशु के गर्स में सूलन के स्थान पर छूने से गर्म का एहसास होता है। पशु को आंखें लास तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचेन रडता है। इस रोग की अवधि 1-3 दिन तक होती है । ऐसी अवस्था में अगर उपचार न किया गया और लायरवाही बरती गयी तो पशु की मीत भी हो सकती है। ऐसे करें बचान यह एक संज्ञामक तथा छुआ-छून वाला रोग है, इसलिए बीमार पशु का प्या किसी अन्य पशु को न खिलायें, लिस पात्र में बीमार पशु को पनी पिलावा है, उससे स्वस्थ पशु को पनी पिलाने से बचें। रोगग्रस्त पशु को वानवरों के समूह से अलग कर दे तो बेहतर नहीं तो जन्य पशुओं में ये रोग फैलने का भय बना रहता है। स्वस्थ पशओं को भी गलाधोटू का एन्टीसीरम लगकर उन्हें बीमार होने से

ह विचायः यह रोग रोगी पश के दुषित चारा पानी तथा खुले भाग से रिसते खन के सम्पर्क में जब स्वस्व पश् आता है तभी यह फैलता है अतः रोगी पशु को तूरला समुद्र से अलग कर उसका इलाज करते हैं । उपचार- पशु में जैसे ही ये लक्षण दिखायी यहें तो शुरुआत में ही पन्सिलीन 20-30 लाख युनिट का इंजेक्सन तुरन लगवाएं तथा 100-200 सी,-सी. एन्टीलंगडी सीरम का इंजक्डन जरूर लगवाएँ। अगर पशु में कोई सुधार न दिखे तो नजदीकी पश् चिकित्सक से सम्पर्क करके रोगी पश् का बेहतर इलाज करवाना न भूलें। एन्द्रेक्स: विषहरी मोठडी रोग कारक- बेसिलस एन्द्रेसिस लक्षणः यदि पशु के मुंह, नाक तथा मल के साथ रक मिला हुआ झाग वैसा निकलता है, तो एन्ग्रेक्स विषहरी गोरही के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में पह के शरीर का तापकम बद्ध होता है, पंजु तेजी के साथ श्वांस

Sign in to edit and save changes to this file.



वर्षाकाल में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएंरू-डॉ रामजी गुप्ता

सत्ता एक्सप्रेस. विशेष पशुपालकों के लिए सलाह



चंद्रशेखर आजाद कृति एवं प्रौद्योगिकी तो पत्नु को विभिन्न संक्रालक रोगों से विष्ठविद्यालय कानपुर के कुलपति बचाया जा सकता है। संक्रामक डॉक्टर डीखर सिंह के निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुखा दिलान विभाग के प्रोकेंसर हाँ रामजी गुप्ता ने पत्रुचलक मध्यों के लिए बरसाल में प्रमुखें को संवरमक रोगों से बचाएं विश्वयं पर एठवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फोलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अमरम्बा में पहुंचा हेते हैं। पशु चारा स्त्रमा बंद कर देता है। दुधारू प्रयुजी का क्य बहुत कम हो जाता है। ऐसी अमस्य में जगर स्थान न विया गया तो पीडित चत्रु की मौत भी सकती है। इसलिए प्रमुखतकों को इस मौसम में पहुओं की विशेष चेखमाल करना चहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर प्रमुओं पर धोड़ा सा भी ध्वान दे

टीके लगवा लेगा फरवदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस चेंग से पशु को तेज बुसार आता है। पैरों तथा मुंह में फफोले पत्र जाते हैं, प्रसादित होने वाले पैर को पटकना पैरो में जुजन (सूर के आस--चस) जिसमें च्या लगठाकर चलता है। खुर में घाव होना एवं धायों में कीड़ा हो जाना कनी–कनी खुर का पैर से अलग हो जाना।

मुँह से जार गिरती खती है, जीम, मसुरे, ओष्ट आदि पर छाले पत जाते हैं झाले पट्टने पर चसमें बस पढ़ जाता है जिलते बात खाने तमा पानी पीने में असमर्थ हो जाता है तथा। तेजी के साथ दर्द होता है। गाविन पहुडों का कवी-कवी गर्मपात हो जाता है। यह रोन 2--12 दिन तक रह सकता है। रोगी पत्रु मरता तो नहीं है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है।

जलादन झमता में आवधिक हास,

लगाये । मुंह के झाले को 1 प्रतिहात फिटकरी अमांत 1 ग्राम फिटकरी 100 जिलीलीटर पानी में घोलकन दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस बीतान प्रमुखे को मुलायन एवं सुपाल्य মাতন হিয়া আনা যাটিए। दर्दनाशक तथा बुखार उताले के लिए इंलेक्शन का प्रयोग करले हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षम दिसे तो तूनना प्रमुचिकिरसक त्ते तम्पर्क करें । गलाधीदस

प्रश्नुओं में गलाचोट् को ऐसे पहचाने पशु को तेल बुखार आता है गले तथा जीम में सुजन बढ जाती है जिसके कारण पशुओं को श्वांस लेने ने तकलीफ डोने लगती है और जसके गले से घर्ष-धर्ष की आवाज निकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अशल्या में पश् चारा तथा पानी नहीं पी चता है, यहां तक की चसे लाग घुटकना मुहिकल हो जाता है, परिणान त्यरूप पत् के मुंह से लात टपकती रहती है। पत्नु के गले में सुजन के ख्वान पर छूने से गर्भ का एल्तात होता है। पतु की आंखें लाल तथा बाहर की ओर निकली দ্রনীত চার্রী ট। মন্নু ম্বামীন বচরা है। इस रोग की उल्लंधि १--3 दिन तक होती है । ऐसी अवस्था में अगन जपवान न किया गया और लापस्वाही बरती गयी तो पत् की मौत भी हो सकती है हिसे करें बचाव यह एक संक्रामक तथा मुआ–जुल वाला रोग डे, इसलिए बीमार पत् का बात किसी अन्य पशु को न सिलाये. जिस पांज में बीमार पशु को पानी पिलाया है, उलते स्वत्य पशु को पानी फिलाने से बचें। रोगडस्त पशु को जानवर्रों के समूह से अलन कर वें तो बेहतत नहीं तो जन्म चलुजों में ये रोग फ़ैलने का भय बना रहता है। स्वस्थ प्रश्नओं को भी गलाघोट्

का एन्टीसीरन लगाकर उन्हें बीमार डोने से बचाय जा लकता है जपवानः इस रोग के उपचार मे सत्याहग उच्च प्रति जैविक तथा बुखार एवं धर्य कण करने की हवायें दी जाती है। यह रोन की जग्रता पर निर्भन करता है अतः अपने नजदीक के पहचिकित्तालय से सम्पर्क कर उंचित इलाज करवाचे, लाग्लवाही की तो पशु से हाथ धोना पत सकता 耷 I

लंगळी बुखार अधवा सुजवा सुजवा बुखार के लक्षणः पीठित पशुं को लेल बुखार आता है। पशु के कोंगें एवं जांधी में चुजन आ जाती है या कडें कंधों एवं जोच तथा भर जाती है. जिसके कारण कुर्र--भुर्र की आवाज आती है। इस रोग की अवधि 1 से 6 दिनों तक होती है। अनव रोन घर निगंतम नहीं किया गया तो पत् की तीन दिनों के अंदर मृत्यु सम्भव है।बचादः वह रोग रोगी पहु के दुवित बाय पानी तथा खुले ग्राम से सिसले खुन के सम्पर्क में जब स्वरूप पशु आता है तभी यह फैलता है अतः रोगी पहुं को तुरन्त राष्ट्रह से अलग कर उसका इलाज करते हैं जगवार- वजु में जैसे ही ये लक्षण विद्यायी पढें तो जुरुआत में ही धेन्सिलेन 20–30 लाख दनिट का ইত্রবিহান ব্রুন্ব নদ্বার্থ রাধ্য 106--200 सी.--सी. एन्टीलंगळी सीमग का इंजव्हान जरूर लगवाएं। अगर च्छ्र में कोई खुवार न दिखे तो नजदीकी पशु भिकितास से सम्पर्क सरके देगी. च्ह्य वह बेहतर इलाज करवाना न चुने । एखेला विषद्य गोही तेग काला-देखिलस एन्द्रसिल त्वलः यदि च्यु के मुंत, नक तथा गत के साथ रक्त गिला हुआ झाग जैसा निकलता है, तो एम्ब्रेक्स विषहनी गोरही के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी

अवस्था में चत्रु के शरीर का तापक्रम बड़ा होता है, पशु लेजी के साम स्वांस लेता है तथा शरीत में सुजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु की अभानक मृत्यु भी हो सकती है । यह रोग प्रमावित पत्रु के सम्पर्क में आने पर अन्य पसुत्रों में फेलता है।

बचाद रोगी पत्रु को बाठे से तुरन्त आतग कर दें। किसी भी अवस्था में पीड़ित पहु का बारा --पानी जन्म पतु को न दें। अगर प्रशु की मृत्यु हो गयी हें तो मृत पत्रु को कभी भी सीधे हाथ रो न छुपे लमा मृत पशु के छिन्नों को तुरन्त बन्द कर दें । मृत पशु को जला दे अथवा जमीन में चुना खलकर থকলা হয়।

उपछर: इस रोग के शुरुआती दौर में एन्द्रेयम एन्टीसीरम 100-150मी.सी. का इंजेक्शन लगसने के बाद लुल्ल गजदीक के च्युविकित्सधिकारी से सम्पर्क करें।

मनेताः गितताइटित

लक्षनः साध्यपाठवा वह रोग दुधारू पत्र के अवन तथा थनों में होता है ।

बीमारियां एक गुलारे के राज्यके में आने से, बीमार चत्रु का दुवित जल र्छ भोजन बहन करने से फैलता है। द्वी गुप्सा ने बसाया कि विश्वमृजनित रोग सुरुप्रका एवं मुंहप्रका चगुओं को, एक बहुत ही छोटें आंस रो न पिख पाने वाले कीढ़े हाता होता है। जिसे दिषाणु या वायरस कहती है। म्हानका-सुरसका नेम किसी भी उस की गायें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निशिवत नहीं है, कहने का गतलब यह हे कि यह रोग कमी भी गांव में कैल सकता है। हालकि गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी बुगारू पहा तुख जाते है। इस नोग का कोई इसाज नहीं है इन्सलिए रोग होने से पहले ही जसके

बेलो की कार्य हमला में कमी,प्रमावित पशु स्वरूख होने के जपनाना भी महीनों हांकरो रहता है।बीमानी से टीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन बमता वर्षों तक प्रसादित रहती है ज़ारीन के नोयें तथा स्तून बहुत बढ़ जाते हैं उन्होंने कहा कि रोग के लक्षम दिखने का रोगी च्यु को तुल्त अलग बाहे में कन दें एवं पशु के चारागाल को बदल ये । इसका टीकाकरण अवश्य कर्ना सें। इस रोग की रोकधान के लिए रोगप्रस पश के पैर को नीन एवं चीयल के फ़ाले का काहा बना कर दिन में दो से तीन बन धोना चाहिए। छाली को लाल दवा अग्रना बोरिक एतिड के धोल से दो--तीन बार धोळन मक्सी को बुर रखने बाली एंटीलेप्टिक झीम

रोग से प्रबादित होने पर पतु के अपन में दर्द होता है तथा थनों में दूध का यहाव बन्द हो जाता है । रोग अधिक तीव्र होने पर बनों में सुलन आ जाती हे तथा जनको दबाने पर दध की जगह खुन निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए रहीय कय परीक्षण करते हैं जिससे इसकी पुष्टि होती है बचाय हस रोग से बचाव के लिये अवयपक हे कि बुहाई पूर्ण हरत बिह । से सुखे हाचे एवं एक चगु की दुहाई र्छ वद दूसरे च्या के धनों को किसी रोगानुनात्रक से उन्नरप ये ले । उपनार पशु के धनी एवं अंचन में वदि नांठ पह गवी हो तो पॅसिलीन एन्टीबॉवेटिक का प्रयोग करते हैं इसके जलाब पेहीस्ट्रीन को प्रमायित थन में चढानें से, धन इस रोग से मुक्त हो जाता है। वर्षा ऋतु में पशुओं को संकामक रोगों से बचाएं: डॉ. रामजी 02/08/2021 कानपुर। सीएसए के पशुपालन एवं पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की कानपुर। सीएसए के पशुपालन एव दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए वायरस कहते हैं।



बरसात में पशुओं को रोगों से बचाएं

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. रामजी गुप्ता ने रविवार को बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि गलाघोंटू रोग होने पर तेज बुखार आता है। बारिश में पशुओं को बीमारियों से बचाएं। (संवाद)

रविवार world WORLD खबर एक्सप्रेस कानपुर 01 अगस्त 2021 सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर ने पशुपालकों को दिए टिप्स; बारिश में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं: डॉ. रामजी

पशुओं में गलाघोटू को ऐसे पहचाने पशु को तेज बुखार आता है, गले तथा जीभ में सूजन बढ़ जाती है जिसके कारण पशुओ को

सांस लेने मे तकलीफ होने लगती है और उसके गले से घर्र-घर्र की आवाज निकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अवस्था में पशु चारा तथा पानी नहीं पी पाता है, यहां तक की उसे लार घुटकना मुश्किल हो जाता है, परिणाम स्वरूप पशु के मुंह से लार टपकती रहती है। पशु के गले में सूजन के स्थान पर छूने से गर्म का एहसास होता है। पशु की आंखें लाल तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचैन रहता है। इस रोग की अवधि 1–3 दिन तक होती है। ऐसी अवस्था में अगर उपचार न किया गया और लापरवाही बरती गई तो पशु की मौत भी हो सकती है।

इस तरह करें उपचार

पशओं की देखभाल करें।

इस रोग के उपचार में सल्फाइग उच्च प्रति जैविक तथा बुखार व दर्द

कम करने की दवाएं दी जाती हैं। यह रोग की उग्रता पर निर्भर करता

है, इसलिए अपने नजदीक के पशुचिकित्सालय से संपर्क कर उचित

इलाज कराएं, लापरवाही की तो पशु से हाथ धोना पड सकता है।

उपचार का तरीका

पशु में जैसे ही ये लक्षण दिखायी पड़ें तो

शरुआत में ही पेंसिलीन 20-30 लाख

यूनिट का इंजेक्शन लगवाएं तथा 100-

200 सीसी. एंटीलंगडी सीरम का इंजेक्शन

जरूर लगवाएं। अगर पशु में कोई सुधार न

दिखे तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क

कर रोगी पशु का बेहतर इलाज कराएं।



यह एक संक्रामक व छुआ-छूत वाला रोग है, इसलिए बीमार पशु का चारा किसी अन्य को न खिलाए, जिस पात्र में बीमार पशु को पानी पिलाया है, उससे स्वस्थ को पानी पिलाने से बचे। रोगग्रस्त पशु को जानवरों के समूह से अलग कर दें। स्वस्थ पशओं को भी गलाधोट का एंटीसीरम लगाकर उन्हें बीमार होने से बचाया जा सकता है।

इस तरह करें बचाव

यह रोग रोगी पशु के दूषित चारा-पानी तथा खुले घाव से रिसते खून के संपर्क में जब स्वस्थ पशु आता है तभी यह फैलता है, इसलिए रोगी पशु को तुरंत समूह से अलग कर उसका इलाज करते है। जरूरत पर डॉक्टर से संपर्क करें और बीमार पशु का उचित इलाज कराएं।

एन्थ्रेक्सः विषहरी गोरही रोग

यदि पशु के मुंह, नाक तथा मल के साथ रक्त मिला हुआ झाग जैसा निकलता है तो एन्थ्रेक्स विषहरी गोरही के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में पशु के शरीर का तापक्रम बढ़ा होता है, पशु तेजी के साथ सांस लेता है तथा शरीर में सूजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु की अचानक मुत्यु भी हो सकती है। यह रोग प्रभावित पशु के संपर्क में आने पर अन्य पशुओं में फैलता है।

उपचार भी है जरूरी

इस रोग के शुरुआती दौर में एन्थ्रेक्स एन्टीसीरम 100-150 सीसी का इंजेक्शन लगवाने के बाद तुरंत नजदीक के पशु चिकित्साधिकारी से संपर्क करें। अगर जरूरत दिखे तो पशु को अस्पताल में भर्ती कराएं।

इस तरह मिलेगी मदद

बचाव के लिए आवश्यक है कि दुहाई पूर्ण हस्त विधि से सूखे हाथों व एक पशु की दुहाई के वाद दूसरे के थनों को किसी रोगाणुनाशक से अवश्य लें। पशु के थनों व अयन में यदि गांठ पड़ गई हो तो पेंसिलीन एंटीबॉयोटिक का प्रयोग करते हैं। इसके अलावा पेडीस्ट्रीन को प्रभावित थन में चढ़ाने से, थन इस रोग से मुक्त हो जाता है।



सकता है। हालांकि, गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सूख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है, इसलिए

रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना

फायदेमंद है। उन्होंने कहा कि इस रोग से

को लाल दवा या बोरिक एसिड के घोल से

दो-तीन बार धोकर मक्खी को दर रखने

वाली एंटीसेप्टिक क्रीम लगाएं। मुंह के

छाले को 1 फीसदी फिटकरी अर्थात 1 ग्राम

फिटकरी, 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर

दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान

पशुओं को मुलायम व सुपाच्य भोजन दिया

जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने

के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि

आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो

तुरंत पशुचिकित्सक से संकर्प करें।

ऐसे करें पशुओं का बचाव

लंगडी या सुजवा बुखार पीड़ित पशु को तेज बुखार आता है। पशु के कंधों एवं जांधों में सुजन आ जाती है या कहे

तो कंधों व जांध में हवा भर जाती है जिस कारण चुर्र-चुर्र की आवाज आती है। इस रोग की अवधि 1 से 5 दिनों तक होती है। अगर रोग पर नियंत्रण नहीं किया गया तो पशु की तीन दिनों के अंदर मृत्यु संभव है।



बचाव के तरीके

रोगी पशु को बाड़े से तुरंत अलग कर दे। किसी भी अवस्था में पीड़ित पशु का चारा -पानी अन्य पशु को न दे। अगर पशु की मृत्यु हो गई है तो मृत पशु को कभी भी सीधे हाथ से न छुए। मृत पशु को जला दें अथवा जमीन में चूना डालकर दफना दें।

थनैलाः मिसटाइटिस

साधरणतया यह रोग दुधारू पशु के अयन तथा थनों मे होता है। रोग से प्रभावित होने पर पशु के अयन में दर्द होता है तथा थनों में दूध का वहाव बंद हो जाता है। रोग अधिक तीव्र होने पर थनों मे सूजन आ जाती है तथा उनको दबानें पर दूध की जगह खून निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए स्ट्रीप कप परीक्षण करते हैं जिससे इसका पता चलता है।

पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में फफोले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना, पैरों में सूजन (खुर के आसपास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है। खुर में घाव होना व घावों में कीड़ा हो जाना, कभी-कभी खुर का पैर से अलग हो जाना। मुंह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ट आदि पर छाले पड़ जाते हैं, छाले फूटने पर उसमें पस पड़ जाता है जिससे पशु चारा खाने तथा पानी पीने मे असमर्थ हो जाते हैं और तेजी के साथ दर्द होता है। माता पशुओं का कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नही है लेकिन बहुत कमजोर हो जाता है। उत्पादन क्षमता में अत्यधिक ह्वास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी, प्रभावित पशु स्वस्थ्य होने के बाद भी महीनों हांफते रहता है। बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है। शरीर के रोएं तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरंत अलग बाडे में कर दें और पशु के चारागाह को बदल दें। इसका टीकाकरण अवश्य करा लें। इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पश के पैर को नीम व पीपल के छाले का काढा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालों

उन्होंने बताया कि संक्रामक बीमारियां एक-दूसरे के संपर्क में आने से, बीमार पश् का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलती हैं। विषाणुजनित रोग खुरपका व मुंहपका पशुओं को एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े से होता है जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका-खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें व उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह है कि यह रोग कभी भी गांव में फैल



कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. रामजी गुप्ता ने पशुपालकों के लिए बारिश में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बारिश के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है, इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशओं को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है।

